प्र.1. मात्र दो शब्दों में उत्तर लिखो । 20 **20**

उदा. किसने क्रोधावेश में आकर वैर का बदला लिया ।

उत्तर पालक, स्कन्दकाचार्य 138

पृष्ठ क्र.

1) कौनसे संयोग अत्यंत दुर्लभ है ?

Ans. गुणवान, रूपवान 239

2) कौनसी 2 बहनों ने 1 से ही पाणिग्रहण का सोचा ?

Ans. सुज्येष्ठा, चेलना 15

3) किसके सेवन में साक्षात् नरक का दर्शन है ?

Ans. अर्थ, काम 234

4) किसका जन्म युगलरुप में हुआ ?

Ans. भामण्डल, सीता 104

5) कौनसी 2 उपमाऐं संसार में रहे पदार्थों को दी है ?

Ans. इन्द्रजाल, मेघधनुष 19

6) कौनसी 2 सतियों के चरित्र का वर्णन महापुरुष भाग-1 में है ?

Ans. महासती नंदा, महासती भद्रा XIV

7) आत्मा किससे तृप्त बनती है ?

Ans. त्याग से, वासनाओं पर विजय पाने से 124

8) किसने क्षमा आदान-प्रदान की ?

Ans. चंदनबाला, मृगावती 26

9) कौनसा पिता ईर्ष्यालु तो पुत्र केवली था ?

Ans. राजा कुबेर 73 सिंह केसरीमुनि 73

10) कौनसी 2 स्त्रियों ने जलक्रीडा द्वारा 2 अलग अलग प्रसंगों में आग्रह किया ?

Ans. विशल्या + सीता 194 रुक्मिणी + सत्यभामा 231

प्र.2. शब्दों के समुह के आधारपर 'कर्म' इस विषय से संबंधित वाक्य लिखिए । 10

10

उदा. = (जीवात्मा, कर्मों, सजा)=किए हुए कर्मों की सजा जीवात्मा को भुगतनी ही पड़ती है । 100

1. (आठ, आत्मा, शत्रु) आत्मा के वास्तविक शत्रु तो ये आठ कर्म ही हैं । 216

2. (फल, स्वकृत, उदय) क्योंकि दुःख भी स्वकृत कर्म के उदय का ही फल है । 116

3. (दुष्कर्म, निमित्त, दुःख) दुःख में अन्य जीवात्माएँ तो निमित्त मात्र हैं, मुख्य कारण तो स्वकृत दुष्कर्म ही है । 204

4. (सुख, अशुभ, चक्र) शुभ-अशुभ कर्म के उदय से जीवन में सुख-दुःख का चक्र घूमता रहता है 58

5. (संसार, जन्म, प्राणी) इस संसार में सभी प्राणी अपने अपने कर्म के अनुसार जन्म धारण करते हैं । 260

6. (अपगमन, धर्म, कर्ममल) आत्मा पर अनादिकाल से जो कर्ममल लगा हुआ है, उस मल का अपगमन भी धर्म से ही होता है । 125

7. (नवीन, रोते रोते, बंध) पाप कर्मों की सजा को रोते-रोते सहन करने से वे पाप कर्म छूटने वाले नहीं हैं, बल्कि नवीन पाप कर्मों का ही बंध होनेवाला है । 255

8. (वियोग, व्यक्ती, प्राप्त) अपने दुष्कर्म के उदय से ही जीव प्रिय व्यक्ति के वियोग के दुःख को प्राप्त करता है । 91

9. (जीवन, कष्ट, पाप) पाप कर्म के बिना जीवन में कभी कष्ट आते नहीं है । 32-33

10. (अलग, मौत, गति) इसी प्रकार मौत के साथ ही सभी जीव अपने अपने कर्म के अनुसार अलग-अलग गति में चले जाते हैं । 20

.3. निम्नोक्त दियें हुए अक्षरों की संख्या के अनुसार विशेषता तथा लक्षण लिखिए । **15**

15

उदा. = हनुमान = राम का सेवक | 6 | 166 |

1. आत्मा = अमर | 3 | 136 | 2. लक्ष्मण = पराक्रम | 4 | 127 |

3. ऋषीदत्ता = सर्वहितकारिणी | 7 | 263 |

4. रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. = धीर | 2 | IX |

5. तत्वमालीनी = तत्व-रसिक | 5½ | 224 |

6. रावण = सहस्त्रविद्यापति | 7½ | 148 |

7. सीता = कोमलांगी | 4 | 116 | 8. नल = तेजस्वी | 3½ | 61 |

9. सुंदरा = सन्नारी | 3½ | 59 | 10. आयुष्य = चपल | 3 | 19 |

11. बुद्धि = कर्मानुसारिणी | 6 | 9 |

12. मदनांकुश = निपुण | 3 | 207 |

13. सुलसा = सौभाग्यशालिनी | 6½ | 21 |

14. दशरथ = दृढ़प्रतिज्ञ | 5 | 118 | 15. मोक्ष = अविनाशी | 4 | 193 |

प्र.4. निम्नोक्त शब्दों के समुह से जो शब्द मेल नहीं खाता उसे छाँटे और काँटें। बचे हुये शब्द किसे निर्देशित करते है, वह संक्षिप्त में 2/4 शब्दों में लिखिए। (Odd Man Out-Group Name) यदी 3 हो तो कोई 1 पृष्ठ क्रमांक लिखिए। 30

30 (-1)

उदा. = (राजपुत्री का दासीपना, मुंडीत मस्तक, ~~विवाहीत~~, तीन उपवास) = महावीर प्रभु के अभिग्रह की कुछ शर्ते 34

1. जिनपुजा, कंदमूल त्याग, रात्रि भोजन त्याग, ध्यान
श्रावक के बाह्य आचारों का पालन 225

2. दूरदर्शिता, दृढता, श्रावक, शासन प्रेम
पूज्य आचार्य श्री की विशेषता और गुण X।।

3. मदनरेखा, मणीप्रभ, नमिकुमार, चंद्रयश
मदनरेखा का परिवार 52

4. हिंसा नहीं, परिग्रह नहीं, मांसाहार नहीं, रात्रिभोजन नहीं
जटायु की मुनि के समक्ष तीन प्रतिज्ञाएँ 138

5. अचलपुर, तापसपुर, कुंडीनपुर, ~~सुंसमारपुर~~
पति शोध में दमयंती का विचरण क्षेत्र ✓ | 76

6. ~~कृष्ण~~, विष्णु, ब्रह्मा, शंकर
सुलसा परीक्षा हेतु अंबड़ का रूप धारण ✓ | 22

7. ~~रामपत्नी~~, सुप्रभा, गणधर, अच्युतेन्द्र
निर्मल संयम जीवन का पालन ✓ | 222

8. ~~सुख-शांति~~, विनयी पुत्र, प्रिय पत्नी, संत पुरुषों की संगति
गृहस्थ जीवन में विश्राम स्थल ✓ | 8

9. धर्मश्रद्धा, धर्मश्रवण, ~~लंबीआयु~~, मानवभव
संसार की दुर्लभ वस्तुएँ ✓ | 52

10. ~~सीता साध्वी~~, राममुनि, अरिदमन मुनि, सिंहकेसरी मुनि
केवल ज्ञान प्राप्त हुआ ✓ | 240

11. सुलसा, आनंद, ~~नर्मदा सुंदरी~~, धन्ना
पौषध पारते समय का नाम स्मरण ✓ | 1

12. ऋषभ, ~~सीमन्धर स्वामी~~, चंद्रानन, वर्धमान स्वामी ✓
मंदिरों में शाश्वत जिन प्रतिमाएँ | 46

13. ~~मित्रता~~, नम्रता, सरलता, विनय
ऋषिदत्ता के गुण ✓ | 248

14. शराब, शिकार, ~~असत्य~~, जुएं से मुक्ति। ✓
कुबड़े की प्रार्थना और इच्छा | 70

15. दण्डक, ~~मालक~~, जटायु, गिद्ध पक्षी।
मुनि दर्शन होते ही प्रसन्न ✗ | 133

16. राजीमती, नेमिनाथ, ~~श्रीकृष्ण~~, रथनेमि।
दीक्षा अंगीकार कर ली ✓ | 232

17. इन्द्रजीत, मेघवाहन, ~~अक्षकुमार~~, कुम्भकर्ण।
राम सैन्य द्वारा बन्धनग्रस्त ✓ | 176

18. ~~वीरमती~~, शीलवती, कल्याणमित्र, समकित दाता।
मदनरेखा के गुण ✓ | 37

19. रावण, साहसगति, शम्बुक, ~~सुग्रीव~~। ✓
विद्या की साधना की | 154

20. ~~शाश्वत~~, क्षणिक, क्षणभंगूर, नाशवन्त।
संसार के सुख ✓ | 155

5. अचलपुर, तापसपुर, कुंडीनपुर, ~~सुंसमारपुर~~
दमयंती जिन स्थान पर रही। — 76

6. ~~कृष्ण~~, विष्णु, ब्रह्मा, शंकर
सुलसा के सम्यक्त्व की परिक्षा के लिए अंबड द्वारा धारण रूप — 22

7. रामपत्नी, ~~सुप्रभा~~, गणधर, अच्युतेन्द्र
सीता जी के भव (भूत, भविष्य, वर्तमान) — 222-223

8. ~~सुख शांति~~, विनयी पुत्र, प्रिय पत्नी, संत पुरुषों की संगति
ग्रहस्थ जीवन में विश्राम स्थल समान — 8

9. धर्मश्रद्धा, धर्मश्रवण, ~~लंबीआयु~~, मानवभव
अनादि अनंत संसार में महान पुण्योदय से प्राप्त दुर्लभ वस्तु — 52

10. ~~सीता साध्वी~~, राममुनि, अरिदमन मुनि, सिंहकेसरी मुनि
मोक्षगामी मुनि — 240

11. सुलसा, आनंद, ~~नर्मदा सुंदरी~~, धन्ना
पौषध पारते समय गाथा में आते नाम — 1

12. ऋषभ, ~~सीमन्धर स्वामी~~, चंद्रानन, वर्धमान स्वामी
शाश्वत जिनमंदिरों में रही शाश्वत जिन प्रतिमाएँ — 46

13. ~~मित्रता~~, नम्रता, सरलता, विनय
पूरे परिवार को प्रभावित करने वाले ऋषिदत्ता के गुण — 248

14. शराब, शिकार, ~~असत्य~~, जुएें से मुक्ति।
व्यसन (सुसमारनगर मुक्त किया गया) — 70

15. दण्डक, ~~पालक~~, जटायु, गिद्ध पक्षी।
दण्डक राजा के भव। — 138

16. राजीमती, नेमिनाथ, ~~श्रीकृष्ण~~, रथनेमि।
पवित्र मोक्षगामी आत्माएं — 235

17. इन्द्रजीत, मेघवाहन, ~~अक्षकुमार~~, कुम्भकर्ण।
संयम ग्रहण कीया — 187

18. ~~वीरमती~~, शीलवती, कल्याणमित्र, समकित दाता।
मदनरेखा पति हेतु थी — 48

19. रावण, साहसगति, शम्बुक, ~~सुग्रीव~~।
राम लक्ष्मण द्वारा मारे गये। — 140

20. ~~शाश्वत~~, क्षणिक, क्षणभंगूर, नाशवन्त।
संसार के सुख का स्वरूप — 155

प्र.5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें । उत्तर आकारों में दिये हुये खानों की संख्या के अनुसार लिखीए । प्रथम अक्षर समान हो ऐसे उत्तरो को छाँटकर लिखीए । समान अक्षरों के साथ साथ समान पाठ कें वाक्यों का एक आकार होगा । आकार के नीचे पाठ का नाम लिखीए । 35

उदा.

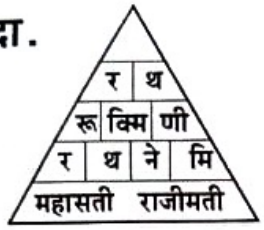

1. ____________ में आ रहें नेमिकुमार को देखने लगी । 231

2. ____________ का आग्रह देख नेमिकुमार मौन रहे । 231

3. राजीमती के वचनों ने ____________ की सुषुप्त आत्मा को जागृत कर दिया । 235

1)

2)

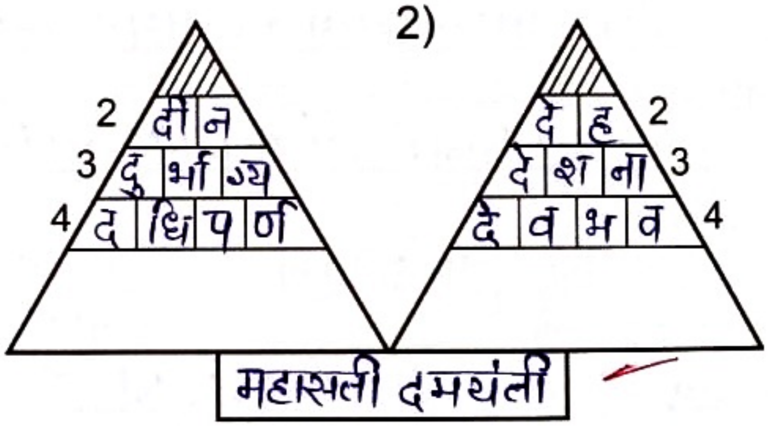

3)

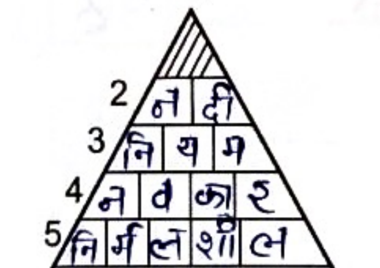

4)

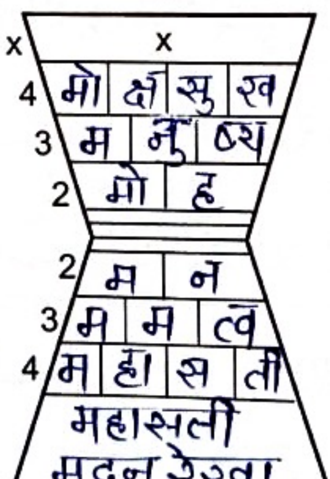

5)

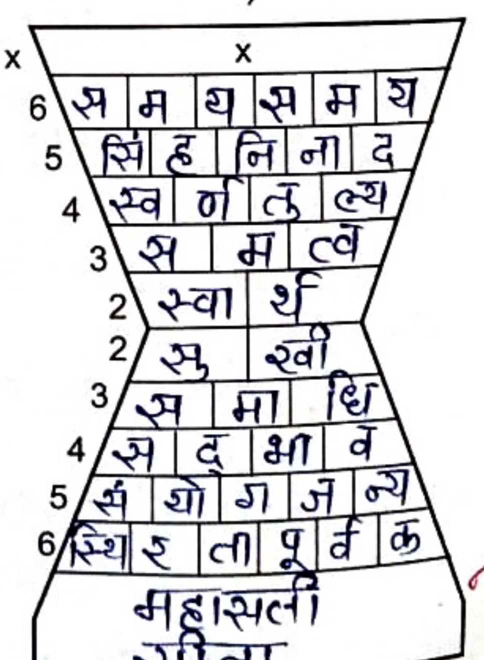

प्र.6. ◆ एक दूसरे से संबधित व्यक्तियों को पहचानिए । [20]

◆ युगल उत्तरों का पहला अक्षर समान है ।

उदा. = एक राजा–एक रानी = पद्मरथ राजा – [46] पुष्पमाला रानी – [46]

1. एक सौतेली माँ–एक सगी माँ – 1. कैकेयी [113-114]
   2. कौशल्या [115]
2. एक पिता–एक पुत्र = 1. निषध [68] 2. नल [68]
3. एक मुनि–एक श्रमणी = 1. रथनेमि 2. राजीमती [233]
4. एक पहली पुत्री-एक दूसरी पुत्री = 1. प्रभावती [10] 2. पद्मावती [10]
5. एक देशोद्धारक–एक संस्कार दाता =
   1. पू. रामचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. [i] 2. पू. रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. [V]
6. एक असली–एक नकली (व्यक्ती) = 1. सुग्रीव [155] 2. साहसगति [155]
7. एक पूर्वभव का नाम–एक इस भव का नाम =
   1. सीता [222] 2. सीतेन्द्र [222]
8. एक भाई–एक बेटा (आज्ञापालक का) =
   1. लक्ष्मण [210] 2. लव [210]
9. एक माता–एक पुत्री = 1. गंगा [265] 2. गंगासेना [265]
10. एक की प्रतिज्ञा–एक का संकल्प (एक पुरुष के लिये) =
    1. विशल्या [178] 2. वनमाला [128]

नु प्र.7. **निम्नोक्त विशेषताओं के आधार पर पहचानीए ।** 30

(केवल सतियों के) नाम 3 बार से ज्यादा रीपीट नहीं होंगे ।

30

उदा. = अद्‌भूत रुप = 1) मदनरेखा 37 2) दमयंती 59
3) राजीमती 229

1. दीक्षित पती-पत्नी = 1) नल दमयंती 84
2) महेश्वरदत्त नर्मदासुंदरी 99
3) कनकरथ ऋषिदत्ता 266

2. मोक्षगामी (महासतियाँ) = 1) चंदनबाला 35
2) सुभद्रा 228 3) राजीमती 229

3. शील रक्षा (किसने की ?) = 1) वसुमती 30
2) मदनरेखा 44 3) सीता 160

4. सहायक देव = 1) हरिणगमेषीदेव 7
2) युगबाहु देव 49 3) निषधदेव 68

5. जातिस्मरण ज्ञान (किसे हुआ ?) = 1) नर्मदासुंदरी 99
2) भामण्डल 112 3) जटायु पक्षी 131

6. परमात्म भक्ति (किसने की ?) = 1) सुलसा 4
2) सीता 204 3) रावण 182

7. श्रावक = 1) ऋषभसेन 87
2) जिनदास 97 3) वज्रकर्ण 125

8. न्याय व नीति के (पालक) = 1) चंद्रयश 50
2) निषध राजा 59 3) नल 62

9. निर्दोष = (व्यक्ति) 1) निःसंगा साध्वी 265
2) ऋषिदत्ता 252 3) शम्बूक 141

10. सतीत्व (धारक) 1) दमयंती 71
2) सीता 117 3) सुभद्रा 228

प्र.8. A) पूर्वभव में किये किस पापकर्म के कारण कलंक लगा और उसका कौनसा फल भुगतना पडा ? तीन उदा. द्वारा पृ. क्र. सहित संक्षेप में समजाईये । **20**

1. नर्मदा सुंदरी :- पूर्व भव में नर्मदा नदी की अधिष्ठायिका नर्मदा देवी थी वह मिथ्यादृष्टि से वासित होने के कारण मिथ्या दृष्टि थी एकबार नर्मदा नदी के तट पर एक महात्मा कायोत्सर्ग ध्यान की साधना कर रहे थे, तभी उस मिथ्यादृष्टि देवी ने उन महात्मा पर भयंकर उपसर्ग किया था। मुनि ने उपसर्ग को समतापूर्वक सहन किया देवी पर लेशमात्र भी दुर्भाव नहीं किया इसी कर्म के कारण नर्मदा सुंदरी के निष्कंलक होते हुए भी वह कलंकित बनी और अनेक उपसर्ग और संकटो का करना पड़ा अंत में संयम धारण कर संपूर्ण कर्मक्षय करके मोक्ष प्राप्त किया। 98

2. महासती सीता :- पूर्व भव में एक निर्दोष एवं पवित्र महात्मा पर दुराचार का कंलक लगा और त्यागी गई। जो निर्दोष को कलंकित करता है वह स्वयं कलंकित हुए बिना नहीं रहता है। कर्म को शर्म नहीं किए हुए कर्मों की सजा जीवात्मा को भुगतनी पड़ती है। सीता के जीवन में सुख दुःख का जो ज्वार हुआ था जिससे सीता की अन्तआत्मा जाग्रत हो गई और संसार से विरक्त बन संयम जीवन अंगीकार किया पूर्व भव के पाप के कारण 14 वर्ष का वनवास और लंका में रहने का कंलक लगा TIT FOR Tat 100

3. महासती ऋषिदत्ता :- पूर्व भव में ऋषिदत्ता ने गंगसेना ने दीक्षा अंगीकार की निःसगा नाम की एक साध्वी कठोर तप करती थी उसके मान सम्मान को देख ईर्ष्यावश बनी गंगसेना साध्वी ने उस पर झूठा आरोप लगाते हुए कहा अहो! दिन में यह तप करती है और रात्रि में राक्षसी की तरह मृतक का मांस खाती है। इस कंलक दान के कारण आगामी भव में निर्दोष ऐसी महासती ऋषिदता को भी मानव भक्षिणी का कंलक आया। हँसते हुए बँधे कर्म का भी विपाक कितना कटु है? इसलिए कहा है जरा कर्म देखकर करिये इन कर्मों की बहुत बुरी मार है। 236

प्र.8. B) कौनसे पापकर्म के कारण किसे और कौनसी सजा मिली ? 20

7A के उदा. तथा पापकर्म को रीपीट ना करें ।

तीन उदा. द्वारा पृ. क्र. सहित समजाईये ।

1. महासती दमयंती :- गत जन्म में मम्मण राजा की वीरमती [74]
नाम की रानी थी एक बार शिकार के लिए दोनों जा रहे थे तब एक मुनि को देखा अपशुकन की वजह से 12 घड़ी तक रोके रखा। उन्ही मुनि से राजा-रानी को धर्म का बोध हुआ और मन से मुनि से क्षमायाचना की। पूर्वभव में मुनि को दी 12 घड़ी की पीड़ा के पापोदय के कारण दमयंती को 12 वर्ष तक पति के वियोग को सहन करना पड़ा दुःख उपसर्ग सहन कीया कर्म कीसी को नही छोड़ते हैं उनका फल भुगतना ही पड़ता है।

2. मणिरथ :- कामान्ध मनुष्य रूप के पिपासु होते हैं। मदन [41]
-रेखा के रूप में आसक्त होकर मणिरथ अपने सगे भाई का खून करने के लिए तैयार हो गया और मणिरथ मौका देखकर उद्यान में गया और युगबाहु और मदनरेखा दोनों ही थे वार्तालाप करते हुए मौका देखकर युगबाहु की छाती में कटार भोंकदी और अपने पाप का भंडा फूट न जाए ऐसे विचार कर उद्यान के दूसरे भाग में एक वृक्ष के नीचे सो गया उसी समय विषैले साँप ने डस लिया और मृत्यु हो गई पाप का फ

3. स्कन्दकाचार्य :- श्रावस्ती में मंत्री पालक और स्कन्दक [132-138]
कुमार के बिच विवाद हुआ पालक हार गया स्कन्दककुमार दीक्षित हुए 500 शिष्यो के गुरु बनें अपनी बहन को प्रतिबोध देने कुंभकारकट नगर आये पालक मंत्री के हृदय में वैर की भयंकर गांठ होने से बदला लेने के लिए षडयन्त्र रचा स्कन्दकाचार्य आदि 500 शिष्यों को घाणी मे पिलने लगा अन्तिम बालमुनि को पिलते ही स्कन्दकाचार्य ने नियाणा किया 500 शिष्य मोक्ष गये और स्वयं अग्निकुमार देव बने पालक सहित कुंभकारकट नगर को भस्मीभूत कर दिया क्रोधावेश में पालक और स्कन्दक ने एक दूसरे का बदला लिया और संसार बढ़ा लिया।

1. दमयंती के शील के प्रभाव से वह सार्थ बडी आपत्ति से बाहर आ गया। | 71

2. वसुमती के शील रक्षण के भाव के प्रभाव से किसी देव ने उस वेश्या का नाक काटा और मुँह काला किया। | 30

3. सीता के शील के प्रभाव से देवराज इन्द्र ने आग बुझा दिया और जल, कमल से भरपूर सरोवर का निर्माण किया। | 215

4. दमयंती के शील के प्रभाव से वह राक्षसी शांत हो गई और अदृश्य हो गई। | 75

5. चन्दनबाला के सुपात्रदान के प्रभाव से सारे बंधन टूट गये। | 35

6. दमयंती के शील के प्रभाव से तृषातुरों की समस्या हल हो गई और भूमि में पानी बाहर आ गया। | 75

7. अनशन व्रत के तप के प्रभाव से सिंहकेसरी मुनि को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। | 74

8. विशल्या के पूर्व भव के तप का ही प्रभाव था कि लक्ष्मण की देह से अमोघविजया शक्ति कम्पित हो उठी भाग। | 179

9. नर्मदा के शील के प्रभाव से उस वेश्या की अकाल मृत्यु हो गई। | 96

10. विशल्या के पूर्व जन्म के तप के प्रभाव के कारण ही उसके स्पर्श से व्यक्ति निरोगी बन जाता है। | 179

11. नारदजी शीलव्रतधारी होते हैं और शील के प्रभाव से ही वे मुक्तिपद को प्राप्त करते हैं। | 104

(केवल सतियों के नाम रीपीट कर सकते हो ।)

1. महासती सुलसा ने शील के निर्मल पालन व 5/25
प्रभु वीर के प्रति दृढ समर्पण भाव से तीर्थंकर नाम गौत्र का बंध किया

2. प्रभु वीर को दिये गये सुपात्र दान के प्रभाव 35
से चंदनबाला के सारे बंधन टूट गए ।

3. मदनरेखा ने अपने पति को सद्धर्म में स्थापित किया 48/54
✗ सम्यक्त्व का दान किया जिसके फलस्वरूप शाश्वत मोक्ष पद प्राप्त किया

4. दमयंती के शील के प्रभाव से अपने पैर के प्रहार से 75
थोड़ी सी मिट्टी खोदने पर ही भूमि में से पानी बाहर आ गया और नृप सुरों ने प्यास शांत की

5. वेश्या की मार को सहन करती हुई नर्मदासुंदरी मन में नवकार 96
मंत्र का जाप करने लगी । नर्मदा के शील के प्रभाव से उस वेश्या की ही अकाल मृत्यु हो गयी

6. विशल्या के पूर्वजन्म के तप के प्रभाव से मूर्च्छित 179
लक्ष्मण की छाती पर हाथ के स्पर्श के साथ ही अमोघविजया शक्ति भाग गई ।

7. सीता के शील के प्रभाव से देवराज इन्द्र ने आग 215
बुझा दी और जल और कमल से भरपूर सरोवर का निर्माण कर दिया ।

8. सती सुभद्रा ने अपने शील के प्रभाव से चालनी में से 228
कुएँ से जल निकाल कर नगर के दरवाजों पर छिड़का और वे तत्काल खुल गये ।

9. पापकर्म के उदय के कारण महासती दमयंती के जीवन में 4
पति-वियोग आदि असह्य दुःख पैदा हुए । किंतु शील धर्म के प्रभाव से सब दूर हो गये

10. कुंती व द्रौपदी के कायोत्सर्ग धर्म के प्रभाव 4
से पांडवों के नागपाश के बंधन टूट गए थे ।

1- निःसंगा नामक साध्वी पर कलंक दान के कारण 236
✗ आगामी भव में ऋषिदत्ता को भी मानव-भक्षिणी
का कलंक आया ।

71